School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "मुक्त एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन" (Mukt evam Paramparagat Vishwavidyalyon mein Adhyayanrat B.Ed. Prashikshanarthiyon ki Shikshan Abhikshamata, Shaikshik Aakanksha evam Samvegatmak Samayojan ka Adhyayan) being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year-2023-24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Surendra Kumar and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Vivek Kumar
(Signature)
Vivek Kumar
Enrollment no.: 2300913

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)
03.06.25
(Signature)
Dr. Surendra kumar
Faculty of Education

(Signature) 03.06.2025
Prof. P.K.Astalin
(Director of Concerned School of Studies)

(Signature) 03/06/25
(Name)
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

Scanned with OKEN Scanner

मुक्त एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन

(Mukt evam Paramparagat Vishwavidyalyon mein Adhyayanrat B.Ed. Prashikshanarthiyon ki Shikshan Abhikshamata, Shaikshik Aakanksha evam Samvegatmak Samayojan ka Adhyayan)

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Vivek Kumar

Enrollment no.: 2300913

Under the supervision of

Dr. Surendra Kumar

Faculty of Education

School of Education

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipuram, (Sector-F) Phaphamau, Prayagraj- 211021

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

मुक्त एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्यनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन

सारांश

वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किसी भी हितधारक या संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों का मूल्यांकन करने की हमेशा आवश्यकता होती है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य, चाहे वह नियमित मोड या दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से आयोजित किया जाता है, शिक्षण कौशलों को शामिल करना, मूल्यों को विकसित करना और शिक्षक प्रशिक्षुओं के मनोवैज्ञानिक कल्याण में योगदान करना है। यह सर्वविदित है कि शिक्षक की प्रभावशीलता, शिक्षक की योग्यता, बुद्धिमत्ता, वर्तमान बदलते समाज के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोंण, शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा, शैक्षिक समायोजन और संवेगात्मक समायोजन जैसे चर प्रभावी और सफल शिक्षक बनाने में बहुत योगदान देते हैं। इसलिए, छात्राध्यापकों के समग्र विकास, विशेष रूप से उनके मनोवैज्ञानिक पहलुओं का सीखने–सिखाने पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि मनोवैज्ञानिक चर शिक्षण प्रभावशीलता में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। दूर से सीखना पारंपरिक कक्षाओं में सीखने से भिन्न है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा वातावरण में, छात्र की सीखने की प्रक्रिया पारंपरिक या आमने–सामने के वातावरण से अधिक जटिल हो सकती है क्योंकि शिक्षार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाएँ या जटिलता अलग–अलग होने के साथ एक दूरस्थ शिक्षार्थी से दूसरे दूरस्थ शिक्षार्थी में भिन्न हो सकती हैं। दूरस्थ शिक्षा को सफल बनाने और आमने–सामने मोड का एक शक्तिशाली विकल्प बनाने के लिए, दूरस्थ शिक्षार्थियों की विशेषताओं का अध्ययन करने और नियमित मोड में उन लोगों के साथ तुलना करने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने शिक्षा के परम्परागत और मुक्त शिक्षण संस्थानो द्वारा संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापकों या बी०एड० प्रशिक्षुओं में एक अच्छे शिक्षक के महत्वपूर्ण गुणों यथा शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आंकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन जैसे चरों को चुना है, क्योंकि इन चरों के समुचित विकास से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे गुणात्मक परिवर्तन परिलक्षित होंगे। इसके अलावा हमारे समाज में बड़े पैमाने पर लिंग भेदभाव भी मौजूद हैं, इसलिए शोधकर्ता ने बी०एड० प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आंकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन पर लिंग के प्रभाव या अन्तर की भी जांच करना आवश्यक समझा है।

मुख्य शब्द : शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-3
2	Literature Review	3-8
3	Description Broad Area	9-11
4	Objectives of the Study	11-12
5	Research Methodology	12-13
6	Expected Outcomes of the Research	13-14
7	References	15-17
	Plagiarism Report	

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

मुक्त एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्यनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन

1. प्रस्तावना

शिक्षा का अर्थ है मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा से सर्वश्रेष्ठ निकालकर उसकी जन्मजात शक्तियों का प्राकृतिक, सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील विकास करना, ताकि एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण किया जा सके जो भावनात्मक रूप से स्थिर, मानसिक रूप से सतर्क, शारीरिक रूप से मजबूत, सामाजिक रूप से कुशल और शैक्षिक रूप से प्रबुद्ध हो। 'शिक्षा' गतिविधियों और अनुभवों का निरंतर पुनर्गठन और एकीकरण है। यह किसी भी समाज को बेहतर बनाने के लिए एक बहुत मजबूत और महत्वपूर्ण रचनात्मक अभिकरण भी है। 'शिक्षा' एक ऐसी प्रक्रिया मानी जाती है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के प्राकृतिक और सामंजस्यपूर्ण विकास में योगदान देती है, उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है, जिसके परिणामस्वरूप वांछनीय व्यवहार परिवर्तन होते हैं और अंततः उसे खुशहाल और जिम्मेदार जीवन के लिए तैयार किया जाता है।

शिक्षा किसी के व्यक्तित्व और समग्र चरित्र पर उल्लेखनीय प्रभाव डालती है। शिक्षित होना और अंततः पेशेवर डिग्री अर्जित करना एक व्यक्ति को अच्छे संगठन, कंपनियों या संस्थानों में भाग लेने और योगदान देने के लिए तैयार करता है और अप्रत्यक्ष रूप से समाज और राष्ट्र के लिए भी योगदान देता है। शिक्षा वह गुण है जो आगे बढ़ने और भविष्य में कुछ रचनात्मक करने की प्रेरणा देता है। शिक्षा को एक योजनाबद्ध और क्रमादेशित प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसे किसी व्यक्ति के व्यवहार में वांछित सकारात्मक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए लागू किया जाता है।

शिक्षा के दो बुनियादी और अपरिहार्य तत्व हैं छात्र और शिक्षक। शिक्षा की पूरी प्रक्रिया को शिक्षक एवं छात्र मिलकर सम्पन्न करते हैं जिसमें शिक्षार्थी के व्यक्तिगत प्रयास, शिक्षार्थी की शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षा, शैक्षिक व संवेगात्मक समायोजन तथा शिक्षक की शिक्षण अभिक्षमता, शिक्षक द्वारा शिक्षा प्रदान करने के लिए किये जाने वाले प्रयास, शिक्षक का व्यवहार एवं उनके द्वारा शिक्षार्थियों को प्रदान की जाने वाली प्रेरणा आदि किसी भी शिक्षा प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक शिक्षक का क्षितिज उन गुणों से विस्तृत होता है जो वह शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करने वाले संस्थानों से ग्रहण करता है। इन संस्थानों का सर्वोच्च कार्य शिक्षक प्रशिक्षुओं को उनके उच्च मिशन के बारे में जागरूक करना और शिक्षार्थियों

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

को समझने व भविष्य में किसी भी राष्ट्र की शिक्षा में शिक्षकों की जिम्मेदारियों के प्रति एक नई दृष्टि प्रदान करना है। इस संदर्भ में शिक्षकों को किसी भी राष्ट्र का वास्तविक निर्माता माना जाता है। एक अच्छे शिक्षक का समुचित ढंग से शिक्षा प्रदान करना या पढ़ाना एक बहुत ही सूक्ष्म और जटिल प्रक्रिया है। एक सफल शिक्षक विद्यार्थी को बुद्धिमत्तापूर्ण अंतर्दृष्टि, पहल और मानवीय समझ लाने में मदद करता है।

छात्रों की शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित प्रत्येक योजना शिक्षक द्वारा उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। वर्तमान परिदृश्य में शैक्षिक अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति की समझ पर जोर देता है। किसी व्यक्ति या शिक्षक की समझ का एक अनिवार्य पहलू उन समस्याओं, कठिनाइयों, भय एवं चिंताओं को जानना है जो शिक्षार्थियों के दिमाग पर उपजती हैं जिनके कारण शिक्षार्थियों के शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न होता है।

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्य रूप से शिक्षा के दो महत्वपूर्ण तरीकों यानी पारम्परिक या नियमित मोड और मुक्त या दूरस्थ शिक्षण मोड से दिए जाते हैं। पारम्परिक व्यवस्था में शिक्षक प्रशिक्षण की गतिविधियाँ फेस टू फेस मोड तथा कक्षा शिक्षण के दौरान आयोजित की जाती हैं। जिसमें विभिन्न शिक्षण विधियों, सूत्रों, कौशलों तथा रणनीतियों आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षु सीखे गये इन विभिन्न शिक्षण विधियों, सूत्रों, रणनीतियों व कौशलों का प्रयोग कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षार्थियों को पढ़ाते समय करते हैं। विभिन्न शिक्षण कौशलों के अर्जन व प्रशिक्षण सीधे प्रशिक्षुओं के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोदैहिक डोमेन को प्रभावित करते है। यह व्याख्यान, निर्देश, व्यवहारिक कार्य और प्रशिक्षण के माध्यम से दिए गए प्रत्यक्ष अनुभव को सुनिश्चित करता है। यह उचित शिक्षण वातावरण प्रदान करता है जो कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कृत्रिम रूप से बनाया गया है। यह सेटअप बहुत विशिष्ट व कठोर है और जहां तक उम्र, समय सीमा, स्थान और अन्य मानदंडों का सवाल है, इसकी कुछ सीमाएं हैं।

दूसरी ओर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली छात्रों व प्रशिक्षुओं को सीखने की गति, रणनीतियों व स्वायत्तता के मामले में स्वतंत्रता देती है और उन्हें नियमित आधार पर अनिवार्य आमने-सामने की आवश्यकता में भाग लेने की छूट देती है। इस प्रणाली में शिक्षार्थियों की आबादी के बडे और विविध समूह और उम्र, आवासीय स्थान के साथ-साथ विभिन्न आर्थिक व

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

सामाजिक कारणों से बीच में शैक्षिक धारा से अलग हो चुके तथा शिक्षा के आमने–सामने के माध्यम से प्रवेश लेने में असमर्थ लोगों को समायोजित करने की क्षमता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक प्रशिक्षण की गतिविधियाँ फेस टू फेस मोड में छूट देते हुए परामर्श कक्षाओं के माध्यम से तथा कक्षा शिक्षण के माध्यम से आयोजित की जाती हैं। परामर्श कक्षाओं (ऑफलाइन व आनलाइन माध्यम) एवं विभिन्न स्व–अधिगम सामग्रियों (मुद्रित व अमुद्रित, रिकार्डेड आडियो–वीडियो व्याख्यान आदि) के माध्यम से शिक्षक–प्रशिक्षकों द्वारा विभिन्न शिक्षण विधियों, सूत्रों, कौशलों तथा रणनीतियों आदि का प्रशिक्षण प्रशिक्षुओं को दिया जाता है। मुक्त एवं दूरस्थ माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु भी सीखे गये इन विभिन्न शिक्षण विधियों, सूत्रों, रणनीतियों व कौशलों का प्रयोग कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षार्थियों को पढ़ाते समय करते हैं। जिससे विभिन्न शिक्षण कौशलों के अर्जन व प्रशिक्षण सीधे प्रशिक्षुओं के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोदैहिक डोमेन को प्रभावित करते हैं।

भारत में विभिन्न केन्द्रीय व राज्य विश्वविद्यालयों द्वारा परम्परागत माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम तो संचालित किये ही जाते हैं साथ ही साथ मुक्त एवं दूरस्थ माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर इग्नू और राज्य स्तर पर कई राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालयों जैसे– उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। इन विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ शिक्षक प्रशिक्षण को गति मिली है। इग्नू व उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से कई शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम संचालित कर रहा है। इग्नू व उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (बी०एड०) को शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में विशेष मान्यता प्राप्त है। यह अच्छी तरह से संरचित और व्यवस्थित कार्यक्रम मॉड्यूल, इंटरैक्शन सत्र, परामर्श सत्र, कार्यशालाओं, टेलीविजन और रेडियो प्रसारण और ई–लर्निंग के माध्यम से शामिल किया गया है।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

किसी भी सुव्यवस्थित अनुसंधान से पहले सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अति आवश्यक हैं, जिसके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

कांत, जेनले (2021) ने ए स्टडी ऑफ़ द इंपैक्ट ऑफ टीचर कमिटमेंट ऑन दिअर टीचिंग एप्टीट्यूड का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया। शोधकर्ता ने गुजरात राज्य के 2000 प्राथमिक शिक्षकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से प्रतिदर्श का चुनाव किया। शोधकर्ता ने आंकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण का उपयोग किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि गुजरात राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों में कार्य अनुभव का कोई भी प्रभाव उनके शिक्षण अभिक्षमता पर नहीं पड़ता है एवं लिंग का प्रभाव शिक्षण अभिक्षमता पर नहीं पड़ता है। शिक्षकों के कमिटमेंट का उनके शिक्षण अभिक्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अमीन, मुस्कान (2020) ने इंपैक्ट ऑफ काउंसलिंग आन सेल्फ कॉन्फिडेंस, लोकस आफ कंट्रोल, सोशल एंड इमोशनल एडजस्टमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ अंडर अचीवर्स का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोधार्थी ने बरमूला जनपद के 441 विद्यार्थियों का चुनाव यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया। शोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि कम उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की काउंसलिंग से सामाजिक और संवेगात्मक समायोजन में मदद मिलती है।

महिपाल (2019) ने टीचर इफेक्टिवेनेस आफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू दिअर टीचिंग एप्टीट्यूड एंड एडजेस्टमेंट का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया। शोधकर्ता ने हरियाणा राज्य के विभिन्न जनपदों से स्तरीकृत प्रतिदर्शन विधि से 200 सरकारी स्कूल के अध्यापकों को चुना। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता, शिक्षक समायोजन, व शिक्षक प्रभावशीलता महत्व पूर्ण रूप से सहसम्बन्धित हैं। ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता उच्च स्तर की पाई गई।

भदौरिया, राघवेन्द्र सिंह (2019) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के लिये शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालयों से 500 विद्यार्थियों को यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से चुनाव किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि छात्राओं का समायोजन, छात्रों से बेहतर है तथा शासकीय विद्यालयों का समायोजन अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों से अच्छा है।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

मित्रा, सुदीक्षणा (2017) ने ए स्टडी ऑफ आफ एकेडमिक सक्सेस आफ स्टूडेंट टीचर इन रिलेशन टू टीचिंग एप्टीट्यूड एंड एटीट्यूड टुवार्ड्स टीचिंग प्रोफेशन का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने प्रतिदर्श के रूप में 300 बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि महिला बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों से बेहतर है। सरकारी महाविद्यालयों के बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, ऐडेड महाविद्यालयं के बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों से बेहतर पाई गई।

गौतम, अमित एवं अन्य (2016) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन किया, जिसमें निष्कर्ष पाये गये कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अति निम्न ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

सुनीता (2016) ने ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप बिटवीन आर्गनाईजेशनल रोल स्ट्रेस, इमोशनल एडजस्टमेंट एंड मेंटल हेल्थ अमंग फीमेल पुलिस पर्सोनेल का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया। शोधार्थी ने हरियाणा राज्य के 400 महिला पुलिसकर्मी का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया। शोधार्थी ने आंकडों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, प्रोडक्ट मोमेंट विधि, फैक्टर एनालिसिस का प्रयोग किया। शोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि संगठनात्मक भूमिका तनाव के विभिन्न सूचकांक एवं भावनात्मक समायोजन के विभिन्न सूचकांक संरचनात्मक रूप से असहसम्बन्धित हैं।

सिंह, प्रतिमा (2014) ने सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन, जीवन संतुष्टि एवं आत्मविश्वास की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोधकर्ती ने अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोधकर्ती द्वारा सोद्देश्य न्यादर्शन एवं यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से 600 महाविद्यालयी शिक्षकों को शामिल किया गया। शोधकर्त्री ने सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण का प्रयोग किया। शोधकर्त्री ने अध्ययन में पाया कि सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षक, स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

अपेक्षा अधिक समायोजन क्षमता वाले हैं तथा सहायता प्राप्त महाविद्यालयों एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कुमार, संजीव (2011) ने केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकता मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व आवश्यकताओं मूल्य एवं शैक्षिक आकांक्षा पर परिवेश, लिंग एवं शैक्षिक वर्ग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

यादव, प्रमोद कुमार (2011) ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर आधुनिकीकरण और जीवन मूल्यों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का एक अध्ययन किया जिसमें पाया गया कि विद्यार्थियों में क्षेत्र व लिंग के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा स्तर के लिये सार्थक अन्तर पाया जाता है। शैक्षिक आकांक्षा स्तर तथा जीवन मूल्यों के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। उच्च एवं औसत अध्ययन आदतों वाले शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

पाण्डेय, सत्य प्रकाश (2010) ने माध्यमिक स्तर पर बालक तथा बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन तथा शिक्षण अभिरुचियों का तुलनात्मक अध्ययन। शोधकर्ता ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए 500 छात्रों एवं 500 छात्राओं का चयन किया। शोधकर्ता द्वारा सांख्यकीय विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, प्रतिशतांक का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने अध्ययन करते हुये पाया कि बालिकाओं का शैक्षिक समायोजन बालकों से अचछा पाया गया। सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं का शैक्षिक समायोजन सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बालकों से उच्च स्तर का पाया गया। जबकि अनुसूचित जाति के बालकों का शैक्षिक समायोजन अनुसूचित जाति की बालिकाओं में उच्च स्तर का पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र में बालकों का शैक्षिक समायोजन, बालिकाओं से उच्च स्तर का पाया गया जबकि शहरी क्षेत्रों में बालिकाओं का शैक्षिक समायोजन बालकों से उच्च स्तर का पाया गया। कला वर्ग के बालकों का शैक्षिक समायोजन, कला वर्ग की बालिकाओं से उच्च स्तर का पाया गया जबकि विज्ञान वर्ग के बालिकाओं का शैक्षिक समायोजन बालकों से उच्च स्तर का पाया गया।

सिंह, अजय कुमार (2010) ने ए कम्परेटिव स्टडी आफ टीचिंग एप्टीट्यूड वैल्यूज एंड सिटीजनशिप क्वालिटी ऑफ बी०एड० स्टूडेंट स्टडींग इन सेल्फ फाइनेंस एंड रेगुलर इंस्टीट्युशंस

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

पर अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने प्रतिदर्श के रूप में इलाहाबाद जनपद के 400 बी०एड० विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि सेल्फ फाइनेंस और रेगुलर इंस्टीट्युशंस के बी०एड० विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

पी० वडिवेलु (2009) ने ए स्टडी आफ टीचिंग एप्टीट्यूड एंड स्प्रिचुअल इंटेलिजेंस आफ स्टूडेंट टीचर्स इन तमिलनाडु का अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया। शोधकर्ता ने प्रतिदर्श के लिए 1742 बी०एड० विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से किया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता ने टी–परीक्षण, एफ–परीक्षण एवं गुणन–आघूर्ण सहसम्बन्ध विधि का उपयोग किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि स्ववित्त पोषित संस्थाओं से बी०एड० करने वाले विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता सरकारी एवं ऐडेड संस्थाओं से बी०एड० करने वाले विद्यार्थियों से बेहतर पाई गई। महिला बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों से बेहतर पाई गई।

मिश्र, ज्योतिर्मय (2009) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन, तनाव एवं शैक्षिक निष्पत्ति पर भौगोलिक दशाओं के प्रभाव का अध्ययन। शोधकर्ता ने शोध के लिए माध्यमिक स्तर के छात्रों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया। शोधकर्ता ने आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिये मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात, सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि छात्रों के समायोजन स्तर पर अक्षांशीय स्थिति का प्रभाव पड़ता है जबकि देशान्तरीय स्थिति का प्रभाव छात्रों के समायोजन पर नहीं पडता है। पर्वतीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों का समायोजन मैदानी क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया जबकि उष्ण एवं शीतोष्ण जलवायु के छात्रों के समायोजन स्तर पर ये अन्तर नहीं पाया गया।

सिंह, रणविजय (2009) ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सृजनशीलता, समायोजन क्षमता तथा अध्ययन आदत का शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्ध का अध्ययन किया, जिसमें पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनशीलता तथा अध्ययन आदत के बीच सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता तथा अध्ययन आदत के बीच सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत तथा शैक्षिक निष्पत्ति के बीच सार्थक अन्तर होता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अध्ययन आदत

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

का क्षेत्र व लिंग के आधार पर शैक्षिक निष्पत्ति के लिये अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से पड़ते हैं।

शुक्ल, लाल जी (2009) ने नैतिक मूल्यों का सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा 500 नगर एवं 500 ग्रामीण स्तर के माध्यमिक स्कूल के छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। सांख्यकीय विश्लेषण के लिये शोधकर्ता ने माध्य, मानक विचलन, तथा क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया। शोधकर्ता द्वारा अध्ययन करते हुए पाया गया कि उच्च नैतिक स्तर वो शहरी छात्र–छात्राओं का समायोजन स्तर उच्च नैतिक स्तर वाले ग्रामीण छात्र–छात्राओं के समायोजन स्तर के समान है, परन्तु उच्च नैतिक स्तर वाले छात्र–छात्राओं, सामाजिक समायोजन स्तर, निम्न नैतिक स्तर वाले छात्र–छात्राओं के समायोजन स्तर से अधिक है।

मौर्य, राम प्यारे (2006) ने सामान्य एवं दृष्टिबाधित छात्रों की चिन्ता, समायोजन नियंत्रण बिन्दु–पथ (लोकस ऑफ कन्ट्रोल) का एक अध्ययन। शोधकर्ता ने प्रतिदर्श चयन के लिये यादृच्छिक चयन विधि से 205 सामान्य छात्र (100 बालक एवं 105 बालिकाओं) तथा 100 दृष्टिबाधित छात्रों (50 बालक एवं 50 बालिका) के प्रतिदर्श के रूप में चुना गया। सांख्यकीय विश्लेषण के लिये शोधकर्ता ने माध्य, मानक, विचलन टी परीक्षण का प्रयोग किया। शोधकर्ता ने अध्ययन करते हुए पाया कि सामान्य बालकों व सामान्य बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया तथा दृष्टिबाधित बालकों व बालिकाओं के समायोजन में सूक्ष्म अन्तर पाया गया। सामान्य बालकों एवं दृष्टिबाधित बालकों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया तथा सामान्य बालिकाओं व दृष्टिबाधित बाकिाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन पर शोधकार्य अन्य चरों की अपेक्षा कम हुये हैं, यदि हुये भी हैं तो अलग–अलग चरों के साथ हुये हैं, जो अध्ययन हुये हैं उनमें से कुछ अध्ययनों के परिणामों में आपस में विरोधाभास भी पाया गया है। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक व कालेज स्तर के शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन को लेकर कुछ अलग–अलग अध्ययन हुये हैं, लेकिन मुक्त विश्वविद्यालय एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों के बी०एड० प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन को लेकर अध्ययन नहीं हुये हैं।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

3. अध्ययन का विस्तृत क्षेत्र

वैश्वीकरण की गतिशीलता और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की शुरुआत के परिणामस्वरूप वर्तमान समाज एवं समाज को प्रभावित करने वाले संस्थानों में काफी बदलाव परिलक्षित हो रहे हैं। यह बड़े पैमाने पर व्यक्ति और समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं को भी प्रभावित करते हैं और मौलिक रूप शिक्षण संस्थानों में बदलाव की आवश्यकता है जिसमें काफी बदलाव हो रहे हैं और सीखने में अतिरिक्त विशेषज्ञता की उभरती आवश्यकता भी परिलक्षित हो रही है। क्योंकि आर्थिक युग और काम की दुनिया अधिक जटिल है, काम करने और सीखने के लिए नए दृष्टिकोण की मांग है। शैक्षणिक संस्थानों को पहले से कहीं अधिक अपने छात्रों को कार्यात्मक, आजीवन सीखने के कौशल से परिपूर्ण करने की आवश्यकता है। इक्कीसवीं सदी में शिक्षार्थियों को जीविका निर्वाह और आधुनिक परिवर्तनों को पूरा करने की आवश्यकता है। इसने शैक्षिक प्रक्रिया के लिए एक अभिनव और लागत प्रभावी दृष्टिकोंण के रूप में खुली और दूरस्थ शिक्षा के मुद्दे को बढ़ावा दिया है। दूरस्थ शिक्षा, किसी भी प्रकार की शिक्षा की तरह, अलग–अलग उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह मुख्य रूप से उन लोगों की सेवा करती है जो नियमित कक्षा शिक्षण का उपयोग नहीं कर सकते हैं या नहीं करना चाहते हैं। कई वयस्कों की पेशेवर प्रतिबद्धताओं और पारिवारिक ज़िम्मेदारियों की मांग अक्सर पारंपरिक, पूर्णकालिक, निश्चित समय सारणी के साथ आमने–सामने पाठ्यक्रम में भाग लेने को एक अवास्तविक प्रस्ताव बनाती है, जिन कारणों से वयस्क दूरस्थ शिक्षा चुनते हैं जिससे उनको पठन–पाठन में लचीलापन व सुविधा प्राप्त होती है। दूरस्थ शिक्षा गांव या शहरों, युवा या बूढ़े, और अमीर या गरीब के बीच भेदभाव किए बिना बहुत से वयस्कों की मदद करती है, जिसे पूरा करने में अन्य शैक्षिक प्रणालियाँ विफल रहती हैं। दूरस्थ शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने के माध्यम से, छात्र वर्तमान सीमाओं और सीमा रेखाओं की परवाह किए बिना अपनी शैक्षिक जरूरतों को उचित रूप से पूरा कर सकते हैं।

हाल के दिनों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में भी अभूतपूर्व विस्तार देखा जा रहा है, और अब इसे दुनिया के अधिकांश देशों में काफी संख्या में प्रशिक्षुओं के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की पहुंच सुनिश्चित की जा रही है या शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करने के एक सिद्ध साधन के रूप में मान्यता दी जा चुकी है। औपचारिक माध्यम से शिक्षक शिक्षा केवल व्यक्तियों के

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

एक सीमित समूह तक ही पहुँचती है। 1960 के दशक में शैक्षिक योजनाकारों को एहसास हुआ कि औपचारिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण, प्रशिक्षण की मांग को पूरा करने की स्थिति में नहीं है। तब शिक्षा आयोग (1964–66) ने अवलोकन किया था कि "शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में इसके योगदान को प्रभावित करने वाले सभी विभिन्न कारकों में शिक्षकों की गुणवत्ता, दक्षताएं और अनुकूल व्यवहार निस्संदेह सबसे महत्वपूर्ण हैं"। उसके बाद, शैक्षिक योजनाकार ने "राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)" के संदर्भ में निर्णय लिया कि इन असमानताओं को दूर करने की आवश्यकता है। आजकल, दूरस्थ शिक्षा ने औपचारिक शिक्षा पर दबाव कम कर दिया है। हालाँकि, कुछ कारणों से दूरस्थ माध्यम से प्रशिक्षण को दोयम दर्जे की प्रशिक्षण प्रणाली के रूप में देखा जाता है। इस दृष्टिकोंण से शिक्षा के परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ दोनों प्रकार के संस्थानों द्वारा संचालित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के बी०एड० प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा और प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक समायोजन जैसे शिक्षण व शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले चरों का अध्ययन करना काफी दिलचस्प और उपयोगी है।

शोध प्रश्न

शोध समस्या के चयन के पूर्व शोधकर्ता के मस्तिष्क में निम्न शोध प्रश्नों का उद्भव हुआ।

1. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता का स्तर क्या है?
2. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाएं क्या हैं?
3. क्या बी०एड० प्रशिक्षणार्थी संवेगात्मक रूप से समायोजित होते हैं?

समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध हेतु चयनित समस्या इस प्रकार है–

मुक्त एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्यनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषाएं–

शोध समस्या में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषाएं निम्न हैं–

बी०एड० प्रशिक्षणार्थी– प्रस्तुत शोध में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों से तात्पर्य ऐसे विद्यार्थियों से है जो बी०एड० (बैचलर आफ एजुकेशन) कोर्स का प्रशिक्षण परम्परागत एवं मुक्त विश्वविद्यालयों से प्राप्त कर रहे हैं।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

शिक्षण अभिक्षमता– एक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए व्यक्ति को अपनी शिक्षण अभिक्षमता का पता होना चाहिए। शिक्षण अभिक्षमता का अर्थ है विशिष्ट प्रकार के कौशल या ज्ञान को विकसित करने की क्षमता व शिक्षण में रुचि।

शैक्षिक आकांक्षा– व्यक्ति द्वारा अपने अनुभव, योग्यता एवं क्षमता के अनुसार स्वयं द्वारा निर्धारित शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किए गए प्रयासों, दृष्टिकोण एवं अभिप्रेरणा, उत्तरदायित्व, वांछित लक्ष्यों की वास्तविकता एवं पारिवारिक सहयोग के आधार पर भविष्य में किए जाने वाले शैक्षिक कार्य एवं प्राप्त की जाने वाली शैक्षिक सफलताओं के लिए अपनी योग्यता का अनुमान लगाना ही शैक्षिक आकांक्षा है।

संवेगात्मक समायोजन– किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व और उनके व्यवहारों में संवेगों का प्रमुख स्थान है। व्यक्ति को स्वयं से समायोजित होने के लिए उसमें संवेगात्मक परिपक्वता का होना अति आवश्यक है, सही समय पर उपयुक्त संवेगों की अभिव्यक्ति ही संवेगात्मक समायोजन है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्ता द्वारा शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पर विश्वविद्यालयों के प्रकार, प्रशिक्षणार्थियों के लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर विश्वविद्यालयों के प्रकार, प्रशिक्षणार्थियों के लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक समायोजन पर विश्वविद्यालयों के प्रकार, प्रशिक्षणार्थियों के लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

7. परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
8. परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
9. परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

5. अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध हेतु शोध विधि, न्यादर्शन एवं न्यादर्श, अनुसंधान उपकरण, प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों तथा अध्ययन की परिसीमाओं का वर्ण इस प्रकार है–

शोध विधि– प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि– प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया जाएगा। न्यादर्श के रूप में 800 बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को लिया जाएगा। प्रतिदर्श का विस्तृत विवरण प्रस्तुत सारणी के अनुसार निम्न है–

विश्वविद्यालय		पुरूष शिक्षक	महिला शिक्षक	कुल प्रतिदर्श
परम्परागत विश्वविद्यालय	राज्य विश्वविद्यालय	200	200	400
मुक्त विश्वविद्यालय	उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय	200	200	400
कुल प्रतिदर्श		400	400	800

अध्ययन में प्रयुक्त चर– प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चर निम्नलिखित हैं–

- स्वतन्त्र चर– मुक्त एवं परम्परागत विश्वविद्यालय के बी०एड० प्रशिक्षणार्थी
- आश्रित चर– शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन

प्रयुक्त अनुसंधान उपकरणों का विवरण

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य, प्रकृति एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा–

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

1. शिक्षण अभिक्षमता के मापन हेतु आर०पी० सिंह एवं एस०एन० शर्मा द्वारा निर्मित शिक्षण अभिक्षमता टेस्ट बैटरी का प्रयोग किया जाएगा।
2. शैक्षिक आकांक्षा के मापन हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया जायेगा।
3. संवेगात्मक समायोजन के मापन हेतु स्वनिर्मित संवेगात्मक समायोजन मापनी का प्रयोग किया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

प्रदत्तो के संकलन एवं फलांकन के बाद उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों जैसे द्विमार्गी प्रसरण–विश्लेषण, टी–परीक्षण· व प्रोडक्ट मोमेंट सहसम्बन्ध विधि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश राज्य तक सीमित होगा।

2. अध्ययन में उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों एवं उत्तर प्रदेश के राज्य विश्वविद्यालयों के बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा।

6. शोध के अपेक्षित परिणाम

प्रस्तुत शोध के अपेक्षित परिणाम के रूप में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

1. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पर विश्वविद्यालयों के प्रकार, प्रशिक्षणार्थियों के लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव पडता है।
2. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर विश्वविद्यालयों के प्रकार, प्रशिक्षणार्थियों के लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव पडता है।
3. बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक समायोजन पर विश्वविद्यालयों के प्रकार, प्रशिक्षणार्थियों के लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
4. मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।
5. मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

6. मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

7. परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

8. परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

9. परम्परागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।

प्रस्तावित अध्यायीकरण

प्रस्तुत अध्ययन को पांच अध्याय में वर्णित किया जाएगा जो इस प्रकार है –

अध्याय 1 : प्रस्तावना

अध्याय 2 : सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

अध्याय 3 : अनुसंधान अभिकल्प

अध्याय 4 : प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय 5 : निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ

- संदर्भ ग्रंथ सूची
- परिशिष्ट

Vivek Kumar

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अमीन, मुस्कान (2020). इंपैक्ट ऑफ काउंसलिंग आन सेल्फ कॉन्फिडेंस, लोकस आफ कंट्रोल, सोशल एंड इमोशनल एडजस्टमेंट एंड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ अंडर अचीवर्स, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर।

कांत, जेनले (2021). ए स्टडी ऑफ द इंपैक्ट ऑफ टीचर कमिटमेंट ऑन दिअर टीचिंग एप्टीट्यूड, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात।

कुमार, एस० (2011). *केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की व्यक्तित्व आवश्यकता मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के विभिन्न स्तरों पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन*, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

कुमार, एस० एवं यादव, एस० (2012). रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक एचीवमेन्ट एण्ड स्टडी हैबिट्स एमंग सेकेण्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स, *जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन एण्ड रिसर्च*, राम–ईश इन्स्टीट्यूट आफ एजूकेशन, वॉल्यूम, 7।

गौतम, ए०, चन्देल, एन०पी०एस० एवं बंसल, एस०के० (2016). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन, *शैक्षिक योजना एवं प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ।*

पाण्डेय, बी०बी० (1998). *शैक्षिक और सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण*, गोरखपुर : वसुन्धरा प्रकाशन।

पाण्डेय, एस०पी० (2010). *माध्यमिक स्तर पर बालक तथा बालिकाओं के शैक्षिक समायोजन तथा शिक्षण अभिरुचियों का तुलनात्मक अध्ययन*, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

भदौरिया, आर०एस० (2019). *उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं आत्मविश्वास का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन*, शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, रविन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल।

महिपाल (2019). टीचर इफेक्टिवनेस आफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू दिअर टीचिंग एप्टीट्यूड एंड एडजेस्टमेंट, शोध प्रबन्ध, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

Vivek Kumar

मिश्र, जे० (2009). *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन, तनाव एवं शैक्षिक निष्पत्ति पर भौगोलिक दशाओं के प्रभाव का अध्ययन,* शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, जौनपुर।

मित्रा, सुदीक्षणा (2017). ए स्टडी ऑफ आफ एकेडमिक सक्सेस आफ स्टूडेंट टीचर इन रिलेशन टू टीचिंग एप्टीट्यूड एंड एटीट्यूड टुवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता।

मौर्य, आर०पी० (2006). *सामान्य एवं दृष्टिबाधित छात्रों की चिन्ता, समायोजन नियंत्रण बिन्दु–पथ (लोकस ऑफ कन्ट्रोल) का एक अध्ययन,* शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

यादव, पी०के० (2011). *माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर, आधुनिकीकरण और जीवन मूल्यों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का एक अध्ययन,* शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिंगरामऊ, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

रावत, आई०बी० (2017). *कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ स्टडी हैबिट्स ऑफ द स्टूडेन्ट्स स्टडींग इन गवर्नमेन्ट,* ऐडेड एण्ड नॉन ऐडेड स्कूल, *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय शिक्षण शोध संस्थान, लखनऊ।*

वडिवेलु, पी० (2009). ए स्टडी आफ टीचिंग एप्टीट्यूड एंड स्प्रिचुअल इंटेलिजेंस आफ स्टूडेंट टीचर्स इन तमिलनाडु, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्रीराम कृष्ण मिशन विद्यालय, कालेज आफ एजूकेशन, कोयम्बटूर।

शुक्ल, एल०जी० (2009). *शैक्षिक मूल्य का सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन,* शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

सिंह, ए०के० (2012). *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा मे शोध विधियाँ,* नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

सिंह, अजय कुमार (2010). ए कम्परेटिव स्टडी आफ टीचिंग एप्टीट्यूड वैल्यूज एण्ड सिटीजनशिप क्वालिटी ऑफ बी०एड० स्टूडेंट स्टडींग इन सेल्फ फाइनेंस एंड रेगुलर इंस्टीट्यूशंस, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

सिंह, पी० (2014). *सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों में समायोजन, जीवन संतुष्टि एवं आत्मविश्वास की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन,* शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

सिंह, आर० (2009). *माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सृजनशीलता, समायोजन क्षमता, तथा अध्ययन आदत का शैक्षिक निष्पति से सम्बन्ध,* शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

सुनीता (2016). ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप बिटवीन आर्गनाईजेशनल रोल स्ट्रेस, इमोशनल एडजस्टमेंट एंड मेंटल हेल्थ अमंग फीमेल पुलिस पर्सोनेल, शोध प्रबन्ध, डिपार्टमेन्ट ऑफ अप्लाइड साइकाल्जी, गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार हरियाणा।

Vivek Kumar

Scanned with OKEN Scanner

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Vivek Kumar
Title	मुक्त एवं परंपरागत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत बी॰एड॰ प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, शैक्षिक आकांक्षा एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन
Paper Submission ID	3722788
Submitted by	skumarald563@gmail.com
Submission Date	2025-06-03 13:55:27
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **6%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Vivek Kumar